POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A. - I (Hons), Paper-I

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

सम्प्रभुता के लक्षण

सम्प्रभुता के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं —

① निरंकुशता

सम्प्रभुता का अर्थ सर्वोच्च शक्ति से है। यह सर्वोच्च शक्ति निरपेक्ष एवं निरंकुश होती है। सम्प्रभुता आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही क्षेत्रों में निरंकुश होती है। ऑस्टिन के अनुसार "सम्प्रभु अन्य सभी से आदेश पालन कराने की स्थिति में होता है, किन्तु स्वयं किसी के आदेश पालन का अभ्यस्त नहीं होता।"

② मौलिकता

राज्य की सम्प्रभुता मौलिक होती है। यह किसी अन्य सत्ता द्वारा प्रदत्त नहीं होती। सम्प्रभुता से उच्च किसी अन्य सत्ता का अस्तित्व असम्भव है।

③ सर्वव्यापकता

सम्प्रभुता की सर्वव्यापकता का तात्पर्य है कि राज्य के अंतर्गत स्थित सभी व्यक्तियों और समुदायों पर राज्य की प्रभुत्व शक्ति का नियंत्रण रहता है।

Scanned with CamScanner

(4) स्थायित्व

सम्प्रभुता स्थायी होती है। इसमें स्थायित्व का गुण पाया जाता है। सम्प्रभुता का अंत करना राज्य को ही समाप्त करना होगा। न केवल सरकारों में परिवर्तन बल्कि एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य पर विजय प्राप्त कर लेने से भी सम्प्रभुता नष्ट नहीं होती।

(5) अपृथक्करणीयता

सम्प्रभुता राज्य से अपृथक्करणीय होती है। राज्य स्वयं को नष्ट किए बिना सम्प्रभुता का त्याग नहीं कर सकता। गार्नर के अनुसार "सम्प्रभुता राज्य का व्यक्तित्व और उसकी आत्मा है। जिस प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व अदेय है और वह किसी दूसरे को दे नहीं सकता उसी प्रकार राज्य की प्रभुता भी किसी अन्य को नहीं दी जा सकती है।"

(6) अविभाज्यता

सम्प्रभुता में अविभाज्यता का भी लक्षण पाया जाता है। उसे विभाजित करना उसे नष्ट करना माना जाता है। रूसो के अनुसार "सम्प्रभुता का विभाजन केवल एक धोखा है।" पर कुछ विचारक सम्प्रभुता को राज्य और अन्य समुदायों में विभाजित भी मानते हैं।

Scanned with CamScanner